UNIT- Ist

ग्रामीण समाजशास्त्र का अर्थ, क्षेत्र, महत्व

समाजशास्त्र शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 1838 में ऑगस्त कॉम्ट ने किया। ग्रामीण समाजशास्त्र में गाँव, ग्रामीण संस्थाओं तथा सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है।

स्मिथ के अनुसार → "ग्रामीण सामाजिक सम्बन्धों का क्रमबद्ध ज्ञान ही ग्रामीण समाजशास्त्र है"

सैण्डरसन के अनुसार → "ग्रामीण समाजशास्त्र ग्रामीण पर्यावरण में जीवन का समाजशास्त्र है"

उद्भव व विकास → ग्रामीण समाजशास्त्र का विकास 20वीं शताब्दी में अमेरिका व फ्रांस मे हुआ। इन देशो मे प्रभावित इंग्लैण्ड, भारत चीन हॉलैण्ड, पौलैण्ड आदि।

अमेरिका मे 1937 ई० मे ग्रामीण समाजशास्त्रीय समिति की स्थापना से इस विषय को प्रोत्साहन मिला। 1906 से 1915 के बीच कुछ पुस्तकें प्रकाशित हुई।

1. James Michel williams, An American Town
2. warren H. Wilson Quaker Hill
3. Newell L. Sims A Hoosier Village.

1915 मे प्रकाशित गिडिंग्स पुस्तक Social Anatomy of An Agricultural Community में ग्रामीण समाजशास्त्र का वर्णन किया गया।

टी० एल० स्मिथ के अनुसार ग्रामीण समाजशास्त्र का क्षेत्र

- जनसंख्या
- सामाजिक संगठन
  - मानव का भूमि से संस्थात्मक सम्बन्ध
  - सामाजिक संरचना
  - सामाजिक संस्थाएँ
- सामाजिक क्रियाएँ
  - संगठनात्मक प्रक्रियाएँ
  - विघटनात्मक प्रक्रियाएँ

TECHNOLOGY & MANAGEMENT BULANDSHAHR

ऑरी नेल्सन के अनुसार ग्रामीण समाजशास्त्र का क्षेत्र

- ग्रामीण मानव के सम्बन्धों का अध्ययन
  - ① सामूहिक जीवन का अध्ययन
  - ② सामुदायिक जीवन का अध्ययन
  - ③ मानव जाति के सामाजिक जीवन का अध्ययन
- समय परिप्रेक्ष्य अध्ययन
  - ① ऐतिहासिक अध्ययन
  - ② स्थैतिक अध्ययन
- गहन अध्ययन

महत्व

① संसार की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण है
② ग्राम संस्कृति के मूल स्रोत हैं।
③ ग्रामीण समस्याओं के समाधान में सहायक
④ ग्रामीण सामाजिक पुनर्निर्माण में सहायक
⑤ ग्रामीण एवं नगरीय जीवन को समझने में सहायक
⑥ कृषकों की समस्याओं को समझने में सहायक

विज्ञान का अर्थ

विज्ञान किसी विषय के बारे में क्रमबद्ध ज्ञान को कहते हैं यह वह पद्धति है जिसका लक्ष्य अन्तिम सत्य की खोज करना है तथा तथ्यों, घटनाओं एवं वस्तुओं का विश्लेषण करना है ताकि इनके कार्यकारण सम्बन्धों का पता लगाया जा सके।

कार्ल पियर्सन → "समस्त विज्ञान की एकता केवल उसकी पद्धति में है न कि उसकी विषय सामग्री में।"

चैपलिन → "विज्ञान पद्धति के साथ चलता है विषय वस्तु के साथ नहीं।"

विशेषताएँ

① सत्यापनशीलता
② वस्तुनिष्ठता
③ निश्चयात्मकता
④ सामान्यता
⑤ क्रमबद्धता
⑥ कार्यकारण सम्बन्ध
⑦ पूर्वानुमान

पद्धति का अर्थ → पद्धति एक विशिष्ट तरीका है एक ऐसा उपकरण है जिसकी सहायता से अनुसन्धान या अध्ययन की समस्या के बारे में क्रमबद्ध ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। प्रवृत्ति का अर्थ - वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करने में सहायता प्रदान करना है।

गुड स्केट हैट → "जब विज्ञान की आधारभूत बातों को समाजशास्त्र के क्षेत्र में लागू किया जाता है उसे पद्धति कहते हैं"

पद्धति दो प्रकार की होती है → ① सामान्य पद्धति
② विशिष्ट पद्धति

ग्रामीण समाजशास्त्र में प्रयोग की जाने वाली विभिन्न पद्धतियाँ

① ऐतिहासिक पद्धति ② तुलनात्मक पद्धति ③ संरचनात्मक पद्धति
④ संघर्षात्मक पद्धति ⑤ व्यवहारात्मक पद्धति ⑥ व्यवस्थात्मक पद्धति
⑦ क्षेत्र कार्य पद्धति ⑧ अन्तरशास्त्रीय पद्धति ⑨ मिश्रित सांस्कृतिक पद्धति

ग्रामीण अध्ययन की इकाई

① एक गाँव के अध्ययन → एक गाँव के अध्ययन दो विभिन्न श्रेणियों के अन्तर्गत रखे जाते हैं। प्रथम समष्टिवादी तथा दूसरे गाँव के किसी विशेष पहलू से सम्बन्धित है।

② दो गाँवों का अध्ययन इसमें दो गाँवों पर अध्ययन करने के लिये चुना गया है।

③ अनेक गाँवों का अध्ययन इसमें एक या दो गाँव तक ही सीमित न रखकर अनेक गाँवों को सामने रखा।

ग्रामीण समाजशास्त्र की प्रकृति

① ग्रामीण समाजशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है न कि प्राकृतिक विज्ञान
② ग्रामीण समाजशास्त्र एक निरपेक्ष विज्ञान है न कि आदर्शात्मक
③ ग्रामीण समाजशास्त्र व्यावहारिक विज्ञान है।
④ ग्रामीण समाजशास्त्र सापेक्षिक रूप से एक अमूर्त विज्ञान है मूर्त नहीं।
⑤ ग्रामीण समाजशास्त्र एक सामान्यीकरण विज्ञान है विशिष्टवादी अथवा व्यक्तिवादी नहीं

(5) ग्रामीण समाजशास्त्र तार्किक तथा आनुभविक विज्ञान दोनों है

(6) ग्रामीण समाजशास्त्र एक विज्ञान है न कि दर्शन

(7) ग्रामीण समाजशास्त्र सम्पूर्ण सामाजिक विज्ञान नहीं है अपितु सामाजिक विज्ञानों में से एक है।

ग्रामीण समाजशास्त्र नामक प्रथम पाठ्यपुस्तक सन 1916 में प्रकाशित हुई थी।

ग्रामीण समाजशास्त्र में गाँव, ग्रामीण संस्थाओं तथा सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है।

TECHNOLOGY BULANDSHAHR

लघु समुदाय, कृषक समाज, लोक संस्कृति

छोटे आकार के समुदायों को लघु समुदाय कहते हैं, हमारे देश के अधिकांश गाँव लघु समुदाय की श्रेणी में आते हैं। भारत में लगभग 68.84% जनसंख्या गाँवों में निवास करती है, लघु समुदाय की अवधारणा रॉबर्ट रेडफील्ड की देन है। The little Community में लिखा है → "लघु समुदाय मानवता के समस्त इतिहास में मानव का सबसे प्रबल रूप है।" लघु समुदाय एक व्यक्तित्व के समान है।

विशेषताएँ —
1. छोटा आकार
2. प्राथमिक सम्बन्ध
3. आमने सामने का सम्बन्ध
4. विशिष्टता
5. सजातीयता
6. सामुदायिक भावना
7. हम की भावना
8. प्रेम की भावना
9. आत्मनिर्भरता
10. सामूहिक चेतना
11. समरूपता

BULANDSHAHR

कृषक समाज → उसे कहते हैं जिनकी जीवन पद्धति कृषि पर आधारित होती है, गाँवों में कृषक ही निवास करते हैं, इसीलिए गाँवों को कृषक समाज कहा गया है।

कृषक वह है जो कि अपने उपभोग के लिए कृषि करता है न कि व्यापार के लिए या बेचने के लिए फसल उगाता है जो व्यापार के लिए कृषि करता है उसे farmer कहते हैं।

रेडफील्ड के अनुसार – "कृषक उन्हें कहा जाता है जो कि खेती अपने निर्वाह के लिए करते हैं कृषि ही उनके जीवन का आधार है तथा इसका उद्देश्य व्यापार अथवा मुनाफा नहीं है"

फिर्थ → "लघु उत्पादकों को वह समाज जोकि केवल अपने निर्वाह के लिए ही खेती करता है कृषक कहा जा सकता है।

कृषक समाज सामाजिक संरचना के रूप में भारतीय समाज →

1. भूमिहीन कृषक परिवार
2. सीमान्त कृषक परिवार
3. लघु कृषक परिवार
4. धनी व सम्पन्न कृषक परिवार

G & R INSTITUTE & TECHNOLOGY BULANDSHAHR

लोकसंस्कृति → लोकसंस्कृति शब्द के लिए पाश्चात्य साहित्य जगत में फोकलोर शब्द का प्रयोग किया जाता है। जिसके निर्माता विलियम थाम्स थे उन्होंने सन् 1846 में लोकप्रिय पुरातन सामग्री शब्द के लिए फोकलोर शब्द का प्रयोग करने का सुझाव दिया था।

फोकलोर एक सामासिक पद है जिसमें दो शब्दों का योग है फोक और लोर। फोक शब्द की उत्पत्ति एंग्लो सेक्शन शब्द folks से मानी जाती है। जर्मन भाषा में इसे Volk कहते हैं। फोक शब्द का अर्थ है — असंस्कृत लोग।

दूसरा शब्द Lore (लोर) है जो कि एंग्लो सेक्शन (लर) शब्द से बना है लोर शब्द का अर्थ है ज्ञान, विद्या। जनता का यथावत ज्ञान जो कुछ जानकारी है।

जार्ज फास्टर "फोकलोर के अध्ययन का क्षेत्र पहेलियों, गीतों, लोकोक्तियों, लोक विश्वासों तथा विभिन्न प्रकार के अन्धविश्वासों तक विस्तृत है इसके अन्तर्गत बच्चों के खेल पालने के गीत, संस्कार विविध, विधि विधान तथा जादू एवं डायनशास्त्र भी आता है।"

विशेषताएँ

1. सरलता
2. मौखिक सांस्कृतिक परम्परा
3. व्यावसायिकता का अभाव
4. कृषि जीवन पर आधारित
5. स्थानीय स्वरूप
6. कलात्मक क्रियाओं में सामान्य सहभाग
7. सृजनात्मकता
8. बौद्धिक, धार्मिक एवं नैतिक जीवन

लोकसंस्कृति में परिवर्तन

① नगरीय संस्कृति का प्रभाव
② व्यापारीकरण
③ सामूहिक सहभागिता में कमी
④ लोक संस्कृति के क्षेत्र का विस्तार

G.R. INSTITUTE OF MANAGEMENT & TECHNOLOGY BULANDSHAHR

कृषक समाज तथा लघु समुदाय में अन्तर

① लघु समुदाय का आकार छोटा है इसमें प्राथमिक सम्बन्धों की
विशेषता व सामुदायिक भावना पाई जाती है, जबकि कृषक
समाज बड़े आकार का होता है, इसमें सदैव ही सामुदायिक भावना
आवश्यक नहीं है।

② लघु समुदाय में विशिष्टता पायी जाती है कृषक समाज में समाजिक
सांस्कृतिक भिन्नता देखने को मिलती है।

③ लघु समुदाय एक समरूप समुदाय है जबकि कृषक समाज
को समरूप समुदाय कहा है।

④ लघु समुदाय कृषक समुदाय की तुलना में अधिक प्राचीन है।

⑤ लघु समुदाय आत्मनिर्भर होता है जीवन से लेकर मृत्यु तक सभी
आवश्यकताओं की पूर्ति लघु समुदाय में हो जाती है किन्तु कृषक
समाज आत्मनिर्भर होने के साथ समुदायों पर निर्भर हो सकता है।

लघु समुदाय की अवधारणा रॉबर्ट रेडफील्ड ने दी।
और कृषक समाज की अवधारणा राबर्ट रेडफील्ड ने ही दी है।

"लोक संस्कृति लोक की अपनी अलग पहचान एवं विशेषता है"

कृषक समाज से अभिप्राय एक ऐसे समाज से है जिसके अधिकांश सदस्य मुख्यतः कृषि पर ही निर्भर रहते हैं।

"द लिटिल कम्युनिटी" के लेखक रॉबर्ट रेडफील्ड।

BULANDSHAHR
TECHNOLOGY

UNIT- III[rd]

लोक(ग्राम) - नगरीय सातत्य, जजमानी व्यवस्था : प्रभुजाति

ग्रामीण समुदाय → एकाकी परिवार से सम्बन्धित तथा असम्बन्धित लोगो का समूह, जो एक बड़े मकान या निवास के अनेक स्थानों पर रहता हो, घनिष्ठ सम्बन्धों से आबद्ध हो तथा संयुक्त रूप में कृषि कार्य करता हो, ग्रामीण समुदाय कहलाता है,

मैरिल तथा एलरिज के अनुसार → " ग्रामीण समुदाय के अन्तर्गत संस्थाओं एवं ऐसे व्यक्तियों का समावेश होता है जो एक छोटे से केन्द्र के चारों ओर संगठित होते हैं, तथा सामान्य और प्राथमिक हितों द्वारा आपस में बंधे रहते हैं।"

G & R INSTITUTE OF MANAGEMENT & TECHNOLOGY BULANDSHAHR

नगरीय समुदाय → नगरीय समुदाय का अर्थ - जनसंख्या की अधिकता, श्रमविभाजन और विशेषीकरण, औपचारिक एवं द्वितीयक सम्बन्ध, नियन्त्रण के औपचारिक साधनों का प्राधान्य और लोगों का गैर कृषि कार्यों में लगे होना है।

बुरसवर्थ के अनुसार → " सामाजिक भिन्नता वाले व्यक्तियों के बड़े घने बसे हुए एवं स्थायी निवास के रूप में की जा सकती है।"

ग्रामीण एवं नगरीय समुदाय में अन्तर

1. जनसंख्या
2. जनसंख्या का घनत्व
3. आकार
4. प्रकृति से सम्बन्ध
5. सामाजिक सम्बन्ध
6. स्थायित्व
7. परिवार
8. विवाह
9. स्त्रियों की स्थिति
10. सामाजिक गतिशीलता
11. सामाजिक नियन्त्रण
12. " समस्याएँ
13. धर्म
14. आर्थिक व्यवस्था
15. व्यवसाय
16. राजनैतिक व्यवस्था
17. सांस्कृतिक जीवन

जजमानी व्यवस्था → कुछ जातियाँ सेवा के बदले सेवा प्रदान करती हैं सेवाओं के इस विनिमय की व्यवस्था को जजमानी व्यवस्था कहते हैं। जजमान शब्द संस्कृत के यजमान से लिया गया है। जिसका अर्थ है यज्ञ करने वाला।

वेब्स्टर शब्दकोश में जजमान शब्द का प्रयोग उस व्यक्ति के लिए किया गया है जिसके द्वारा एक ब्राह्मण धार्मिक सेवाओं को पूरा करने के लिए दक्षिणा पर लिया जाता है।

रेड्डी → "जजमानी व्यवस्था में परम्परागत रूप से एक जाति का सदस्य दूसरी जाति को अपनी सेवाएँ प्रदान करता है ये सेवा सम्बन्ध, जो परम्परागत रूप से शासित होते हैं जजमान-परजन सम्बन्ध कहलाते हैं।"

जिन सदस्यों के लिए कार्य किया जाता है उसे जजमान कहते हैं जो कार्य करता है उसे परजन कहते हैं (काम करने वाला)

विशेषताएँ

BULANDSHAHR INSTITUTE OF TECHNOLOGY

① जातियों के उद्ग्र सम्बन्धों की व्यवस्था
② स्थायी प्रकार्यात्मक सम्बन्धों की व्यवस्था
③ वंशानुगत प्रथा
④ आजीविका कमाने की परम्परागत विधि
⑤ श्रम विभाजन की व्यवस्था

लाभ

① ग्रामीण समुदाय में एकता बनाए रखने में सहायक
② सामाजिक तथा आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना
③ ग्रामीण समुदाय को आत्मनिर्भर इकाई बनाने में सहायक
④ सामाजिक नियन्त्रण में सहायक
⑤ प्रकार्यात्मक सम्बन्धों को बनाए रखने में सहायक

हानियां

① शोषण को प्रोत्साहन
② व्यवसाय, कृषि उत्पादन तथा उद्योग की प्रगति में बाधक
③ स्थिर व्यवस्था
④ दास प्रथा का प्रतीक
⑤ रूढ़िवादिता को प्रोत्साहन
⑥ राष्ट्रवाद के विकास में बाधा

INSTITUTE OF MANAGEMENT & TECHNOLOGY BULANDSHAHR

जजमानी व्यवस्था में परिवर्तन तथा विघटन

① नगरीकरण तथा औद्योगीकरण
② बढ़ती हुई जनसंख्या
③ शिक्षा तथा नवीन आर्थिक संगठन
④ जमींदारी उन्मूलन
⑤ प्रजातान्त्रिक राजनीतिक प्रणाली
⑥ आधुनिक राजनीतिक एवं धर्म सुधार आन्दोलन
⑦ दैनिक मजदूरी व्यवस्था, महँगाई बढ़ती हुई
⑧ कृषि का व्यापारीकरण तथा शहरी बाजार व्यवस्था
⑨ सेवाओं तथा अधिकारों की स्पष्ट परिभाषा का अभाव

"फॉक कल्चर ऑफ युकेतन (Folk Culture of Yucatan) पुस्तक के लेखक राबर्ट रेडफील्ड।

सेवाओं की विनिमय व्यवस्था को जजमानी व्यवस्था कहते हैं

प्रभु जाति → सामाजिक विज्ञानों में प्रभुत्वपूर्णता की अवधारणा का प्रयोग सर्वप्रथम अफ्रीकी राजनीतिक व्यवस्था के विश्लेषण में हुआ। एम० एन० श्रीनिवास 1959 में मैसूर के रामपुरा गाँव का अध्ययन करने के समय किया। प्रभुजाति की विशेषता → अधिक भू-स्वामित्व, अधिक संख्या और जाति संस्तरण में उच्च स्थान। जब से कृषि के क्षेत्र में तकनीकी क्रान्ति आई है और भूमि सुधार हुआ है तब से मध्यम वर्ग के लोग गाँवों की सत्ता में भागीदारी कर रहे हैं ग्रामीण भारत में औद्योगिकरण, एवं नगरीकरण के प्रभाव के बाद भी यहाँ पर अब भी सम्पत्ति, प्रतिष्ठा और राजनीतिक शक्ति का आधार भूमि का स्वमात्वि है।

विशेषताएं

1. आधुनिक शिक्षा एवं नवीन व्यवसाय
2. आर्थिक एवं राजनीतिक प्रभुत्व
3. जाति व्यवस्था में उच्च सामाजिक स्थिति
4. संख्यात्मक शक्ति
5. सम्पूर्ण गाँव की एकता, न्याय एव कल्याण के लिए कार्य करना

प्रभुजाति का प्रयोग भारत में एम० एन० श्रीनिवास ने किया है।

ग्रामीण एवं नगरीय समुदाय के कारण

1. औद्योगीकरण — नई-2 मशीनों व उत्पादन तक्नीकों का प्रयोग ने उद्योगों को विशाल रूप दिया है,
2. गाँव से नगर की ओर पलायन → गाँव की जनता का नगर की पलायन करना सुविधा, व्यवसाय, रोजगार, बेरोजगारी आदि के कारण।
3. नगरों का आकर्षण → नगरों मे मनोरंजन की सुविधा और नगरो को आकर्षण का केन्द्र माना जाता है। नगरों मे जनसंख्या वृद्धि का कारण है। कोई भी पढ़ा लिखा व्यक्ति गाँव मे नहीं रहना चाहता है। नगरों की ओर जाना पसन्द करता है।

G. S. R INSTITUTE OF MANAGEMENT & TECHNOLOGY BULANDSHAHR

UNIT - IV

ग्रामीण समाज व्यवस्था - भूमि सम्बन्ध

स्वतन्त्रता पूर्व भारत में भूमि सम्बन्धी संरचना → चार वर्ग थे।

① अपनी भूमि तथा पट्टे की भूमि पर खेती करने वाले कृषक
② मध्यस्थ
③ जब इच्छा हो तब खेती करने वाले कृषक
④ खेतों पर कार्य करने वाले श्रमिक

स्वतन्त्रता पूर्व की कृषक संरचना को ह्रासोन्मुख अर्द्ध सामन्तवादी व्यवस्था कहा जाता है। जिसमें अनेक असमानताएँ थी एवं कृषकों का बड़े पैमाने पर शोषण होता था सबसे ऊपर भू-स्वामित्व का केन्द्रीकरण था तथा उत्पादन का स्वरूप भूमि को पट्टे पर देना या लेना था।

ग्रामीण भारत में भूमि सम्बन्धी वर्ग संरचना

जाति की प्रधानता के कारण प्रारम्भ में ग्रामीण भारत में विद्यमान वर्गों का विधिवत् अध्ययन नहीं हुआ इन वर्गों में शासक शोषित, जागीदार, जमींदार, पुजारी, कृषक, श्रमिक आदि।

राधा कृष्ण मुखर्जी ने पश्चिम बंगाल में ग्रामीण वर्ग संस्थान पर लेख कर तीन वर्गों में उल्लेख किया।

① भू-स्वामी तथा देखरेख वाले कृषक
② आत्मनिर्भर कृषक
③ साझेदारी में कृषि करने वाले

गाडगिल ने दो शक्तिशाली वर्गों का उल्लेख किया।

① व्यापारी साहूकार ② भूस्वामी एवं कृषक

आन्द्रबेतई ने कृषक समाज पर चार वर्ग का उल्लेख किया है।

① भू-स्वामी कृषक
② भू-स्वामी खेतिहर कृषक
③ काश्तकार अथवा बटाईदार कृषक
④ कृषि श्रमिक

भूमि के आकार पर वर्ग का उल्लेख →

① बड़े कृषक
② छोटे कृषक
③ सीमावर्ती कृषक
④ भूमिहीन मजदूर

आन्द्रे बेतेई के अनुसार भारत में भूमि सम्बन्धी संरचना तथा कृषक सामाजिक संरचना

① प्रौद्योगिक व्यवस्थाएं → भूमि का प्रबन्ध करना।

② सामाजिक व्यवस्थाएँ → भारतीय कृषक समुदायों में उच्च स्तरीकरण पाया जाता है, स्तरीकरण की इस व्यवस्था का कार्य विभाजन के साथ सम्बन्ध पाया जाता है।

उत्पादन संगठन के तीन प्रतिमान

① पारिवारिक श्रम
② किराये के श्रम पर आधारित प्रतिमान
③ काश्तकारी या किराये पर भूमि जोतने पर आधारित प्रतिमान

TECHNOLOGY BULANDSHAHR

भूमि सम्बन्धी अध्ययनों में अपनाए गए उपागम

① उद्विकासवादी उपागम → बेडन पॉवल, समनर मेन ने मौलिक अधिकार की प्रकृति का पता लगाने का प्रयास किया।

② ऐतिहासिक - भौतिकवादी उपागम → ए० आर देसाई, पी०सी० जोशी तथा डेनियल थार्नर जैसे विद्वानों ने अपनाया।

③ संरचनात्मक प्रकार्यात्मक उपागम → आन्द्रे बेतेई ने इस उपागम द्वारा समकालीन कृषक संरचना का अध्ययन किया है,

ए० आर देसाई, के एस शर्मा, आन्द्रे बेतेई ने कृषक समाज का विस्तृत अध्ययन किया है।

एस० एम० शाह ने गुजरात के गाँवों का अध्ययन किया है।

भूमि सुधार एवं हरित क्रान्ति

भूमि सुधार → खेती करने के तरीके अलग-अलग होते हैं। विभिन्न देशों में भूमि अधिग्रहण के इतिहास में भिन्नताएँ हैं तथा भूमि सुधार से जुड़े विभिन्न देशों की सामान्य सामाजिक आर्थिक स्थितियाँ और राजनीति उद्देश्यों में अन्तर पाया जाता है।

भूमि सुधार में भूमि को धारण करने या भूधृति अधिकारों एवं कृषि से सम्बन्धित संस्थाओं के हित में किए गए सुधार शामिल हैं। ग्राम विकास उपायों को प्रस्तुत करना या उनके माध्यम से सहयोग देना जैसे कि कृषि ऋण में सुधार, आपूर्ति और विपणन के लिए सहकारी समितियाँ में पुनः आवंटित भूमि के उत्पादनकारी प्रयोग हेतु विस्तार सेवाएँ इत्यादि।

महत्व → (1) कृषिक परिसम्पत्ति में वृद्धि (2) वितरणात्मक विषमता (3) वितरण और गरीबी (4) उत्पादकता

स्वतन्त्रता पूर्व भारत में भू-स्वामित्व के प्रतिमान

(1) रैयतवाड़ी व्यवस्था → कृषक का राज्य से सीधा सम्बन्ध होता है जब तक वह निश्चित लगान सरकार को देता रहता था भूमि पर उसका स्वामित्व बना रहता था उसे भूमि को बेचने, हस्तान्तरण करने तथा गिरवी रखने के अधिकार मिले हुए थे। सरकारी लगान वसूलकर्ता कृषक से लगान इकट्ठा करते थे। उसे स्वयं सरकारी खजाने में जमा करवा देता था।

(2) महालवाड़ी व्यवस्था → लगान की इकाई अथवा गाँव से, इस प्रणाली में पूरा गाँव भूमि का स्वामी होता था। तथा मालगुजारी की इकाई अकेले एक कृषक न होकर पूरा गाँव होता था। सरकार को लगान पूरा गाँव देता था।

(3) जमींदारी व्यवस्था → इसमें भूमि का स्वामित्व बिचौलियों के हाथ में होता था। जिन्हें जमींदार कहा जाता है। जमींदार कुछ गाँवों का मालिक होता था।

इसमें कृषक का सीधा सम्बन्ध सरकार से नहीं होता है।

हरित क्रान्ति → 1960-61 से 1968-69 की अवधि देश के कृषि इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इसमें अधिक उपज देने वाले बीजों, उर्वरकों और कृषि उपकरणों को अपनाया है। नवीन कृषि की ओर कदम उठाया है।

हरित क्रान्ति से हमारा आशय सिंचित और असिंचित कृषि क्षेत्रों में अधिक उपज देने वाली किस्मों को आधुनिक कृषि पद्धति से उगाकर कृषि उपज में यथासम्भव अधिक वृद्धि करने से है।

हरित क्रान्ति को जन्म देने वाले घटक

(1) अधिक उपज देने वाली किस्मों का कार्यक्रम (H.Y.V.P.) गेहूं, धान, बाजरा, मक्का, बाजरा, ज्वार केवल 5 फसलों पर लागू किया गया है। गेहूँ की कुछ नई लघु किस्मों से औसत सामान्य उपज 2 टन के स्थान पर 5-6 टन प्रति हेक्टेयर तक प्राप्त हुई है।

(2) सघन कृषि जिला कार्यक्रम I.A.D.P.

(3) सघन कृषि क्षेत्र कार्यक्रम I.A.A.P

(4) बहुफसल कार्यक्रम

(5) खाद और उर्वरक

(6) उन्नत बीज

(7) आधुनिक उपकरण एवं संयन्त्रण

(8) खड़ी फसलों का बचाव

(9) सिंचाई सुविधाओं में वृद्धि

(10) भू-संरक्षण

(11) कृषि साख

(12) कृषि विकास के विभिन्न निगमों की स्थापना

G.L.B. INSTITUTE OF MANAGEMENT & TECHNOLOGY BULANDSHAHR

हरित क्रान्ति को सफल बनाने के सुझाव →

① कृषि उत्पादन से सम्बन्धित सरकारी विभागों में समन्वय
② उर्वरकों का सुनिश्चित वितरण
③ किसानों को उचित प्रशिक्षण सुविधा
④ बीजों का विकास
⑤ फसल बीमा योजना
⑥ ऋण सुविधाएँ उपलब्ध कराना
⑦ भूमि सुधार कार्यक्रम
⑧ ~~सामुदायिक~~ सामुदायिक विकास खण्डों का विकास
⑨ प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार
⑩ छोटे किसानों को विशेष सुविधा
⑪ कृषकों को उचित प्रशिक्षण
⑫ भूमि का गहन अध्ययन
⑬ भू-क्षरण में होने वाली क्षति को रोकना
⑭ सिंचाई सुविधाओं का विस्तार

भूमि सुधार के उद्देश्य

① उत्पादन में वृद्धि करना
② सामाजिक न्याय तथा सामाजिक परिवर्तनों की प्राप्ति
③ अन्य उद्देश्य

भूदान आन्दोलन आचार्य विनोबा भावे ने चलाया था।

भारत में श्वेत क्रान्ति के जनक वर्गीज कुरियन थे।

अधिकतम सीमा निर्धारण के लाभ

1. सघन कृषि को प्रोत्साहन
2. सहकारी कृषि को प्रोत्साहन
3. चकबन्दी को प्रोत्साहन
4. रोजगार के अवसरों में वृद्धि
5. समाजवादी समाज की स्थापना में सहायक

INSTITUTE OF MANAGEMENT & TECHNOLOGY
BULANDSHAHR

UNIT – VI

किसान आन्दोलन, ग्रामीण नेतृत्व

सामाजिक आन्दोलन सामाजिक परिवर्तन लाने या इसको अवरुद्ध करने हेतु सामूहिक प्रयास को सामाजिक आन्दोलन कहा गया है। आन्दोलन किसी विशेष सामाजिक लक्ष्य की ओर बढ़ने या व्यक्तियों द्वारा की जाने वाली निरन्तर क्रियाओं अथवा प्रयासों का एक क्रम है।

ब्लमर → "सामाजिक आन्दोलन ~~समाज~~ अथवा को जीवन की एक नवीन व्यवस्था स्थापित करने का सामूहिक प्रयत्न कह सकते हैं।

हॉर्टन एवं हण्ट → "सामाजिक आन्दोलन समाज अथवा उसके सदस्यों में परिवर्तन लाने अथवा उसका विरोध करने का सामूहिक प्रयास है।"

भारत में कृषक आन्दोलन → भारत में कृषक आन्दोलनों का इतिहास काफी लम्बा रहा है। गॉफ के अनुसार – कृषक आन्दोलन भूमि-पतियों, नौकरशाही, साहूकारों, पुलिस व सेना द्वारा कृषकों के शोषण के परिणामस्वरूप उभरते रहे हैं। गॉफ ने भारत में 1930 ई० तक हुए कृषक आन्दोलनों को 5 श्रेणियों में विभाजित किया।

① पुनर्स्थापनावादी आन्दोलन, ऐसे राष्ट्रवादी आन्दोलन जो भविष्य में अच्छे सम्बन्धों के स्वप्न पर आधारित थे।

② धार्मिक आन्दोलन, जो समाज को बड़े पैमाने पर बदलना चाहते थे तथा धार्मिक या नृजातीय समूहों को स्वायत्तता प्रदान करना चाहते थे।

③ सामाजिक दस्युता सम्बन्धी आन्दोलन

④ आंतकवादी प्रतिहिंसा आन्दोलन

⑤ जन विद्रोह आन्दोलन।

भारत मे कृषक आन्दोलन का संक्षिप्त परिचय →

(1) बंगाल का कृषक आन्दोलन → (1) निज आबाद कृषि
(2) रैयाती कृषि

(2) पटना का कृषक आन्दोलन — 1855 में बंगाल टेनेन्सी एक्ट पारित हुआ।

(3) महाराष्ट्र और गुजरात में हुए कृषक आन्दोलन — 1879 में दक्षिण कृषक अधिनियम पारित हुआ।

(4) पंजाब के कृषक आन्दोलन — 1953 में सरकार ने एक अधिनियम पारित किया।

(5) चम्पारण (बिहार) आन्दोलन — 1922 मे बारडोली मे आन्दोलन में ही आरम्भ किया गया था। लेकिन चौरी-चौरा आन्दोलन के पश्चात् इसे स्थगित करना पड़ा। 1928 ई० मे पुन बारडोली सत्याग्रह आरम्भ किया गया।

(6) उत्तर प्रदेश का कृषक आन्दोलन →

(7) दक्षिण भारत के कृषक आन्दोलन — 1929 में मालाबार टेनेन्सी एक्ट पारित हुआ।

भारत में हुए कृषक आन्दोलनों की भूमिका की आलोचनात्मक समीक्षा → ग्रामीण समाज में ऐच्छिक और सरकारी योजनाबद्ध परिवर्तन के प्रयासों के अतिरिक्त भी एक श्रेणी उन कृषक आन्दोलनों की है, जो कृषकों में स्वत: विकसित हुए हैं।
डी० एन० धनागरे — "कृषक आन्दोलनों के अध्ययन के आधार

पर तर्क दिए हैं ये आन्दोलन उत्पादन के ढंग और उससे उत्पन्न होने वाले अर्द्ध सामन्तवादी सम्बन्धों में परिवर्तन लाने में असमर्थ रहे।

भारत में कृषक सदैव भूपतियों, जमीदारों तथा सरकारी संस्थाओं द्वारा शोषित होते रहे हैं।

नेतृत्व → नेतृत्व किसी अभीष्ट लक्ष्य के प्रति लोगों को प्रभावित करने की क्रिया है यह लक्ष्य सभी के लिए शुभ माना जाता है। नेतृत्व एक समूह के प्रति विशेष प्रकार का व्यवहार है जो नेता के उसके अनुयायियों पर प्रभुत्व का बोध कराता है अतः इसका विकास सामूहिक परिस्थिति में होता है तथा यह नेता और अनुयायियों के बीच पारस्परिक सम्बन्धों के प्रतिमानों के कारण विकसित प्रभुत्व है जिसके आधार पर नेता अनुयायियों के व्यवहार को नियन्त्रित करता है।

मैकाइवर तथा पेज → "नेतृत्व से हमारा अभिप्राय व्यक्तियों को प्रोत्साहित या निर्देशित करने वाली योग्यता से है जो व्यक्तिगत गुणों पर आधारित होती है न कि पद पर।

ग्रामीण नेतृत्व के सामान्य गुण →

(1) शारीरिक गुण → (1) ऊँचाई
(2) वजन
(3) स्फूर्ति
(4) स्वास्थ्य

TECHNOLOGY BULANDSHAHR MANAGEMENT &

(2) बुद्धि

(3) आत्मविश्वास

(4) सामाजिकता

(5) संकल्प शक्ति

(6) परिश्रमप्रियता

⑦ कल्पना शक्ति
⑧ अन्तर्दृष्टि
⑨ परिवर्तनशीलता
⑩ उद्दीपकता

ग्रामीण नेता के कार्य

① प्रबन्धकारी कार्य करना
② योजना बनाना
③ नीति का निर्धारण करना
④ विशेषज्ञ के रूप में कार्य करना
⑤ समूह का प्रतिनिधित्व करना
⑥ आन्तरिक सम्बन्धों का नियन्त्रण करना
⑦ पुरस्कार और दण्ड की व्यवस्था करना
⑧ पंच एवं मध्यस्थ के रूप में कार्य करना
⑨ आदर्श बनाना
⑩ समूह का प्रतीक बनाना
⑪ समूह के पथ-प्रदर्शक के रूप में कार्य करना
⑫ पिता का स्थान ग्रहण करना

G & R INSTITUTE OF MANAGEMENT & TECHNOLOGY BULANDSHAHR

नील विद्रोह बंगाल राज्य में हुआ था।
खेड़ा कृषक आन्दोलन गुजरात राज्य में हुआ था।
किसान सभा आन्दोलन उत्तर प्रदेश में बाबा रामचन्द्र के नेतृत्व में हुआ था।

ग्रामीण नेताओं का वर्गीकरण

① औपचारिक नेता

② अनौपचारिक नेता

① प्राथमिक नेता
② माध्यमिक नेता
सरकारी नेतृत्व का प्रभाव कम होता है,

समकालीन ग्रामीण नेतृ

① वंशानुगत नेतृत्व या अभिजात वर्ग का ह्रास हो रहा है,
② जातीय उच्चता का महत्व घट रहा है,
③ नेताओं के लिए सामाजिक गतिशीलता के अवसर बढ़ रहे हैं
④ लिंग और आयु का प्रभाव नेतृत्व के निर्धारण में महत्वहीन हुआ है।
⑤ ग्रामीण नेतृत्व में विशेषीकरण की प्रक्रिया घटित हो रही है,
⑥ ग्रामीण नेतृत्व में व्यक्ति के चमत्कारी गुणों के स्थान पर सामूहिक शक्ति को प्राथमिकता मिलने लगी है,
⑦ नेतृत्व में प्रजातांत्रिक स्वरूप का विकास
⑧ ग्रामीण नवविकसित नेतृत्व का तीव्र राजनीतिकरण हुआ है,

ग्रामीण समुदाय में नेतृत्व की भूमिका

① जनसंचार के लिए आवश्यक माध्यम की भूमिका
② जनमत का निर्माण करना

③ कठिनाई के समय सलाहकार की भूमिका
④ विकास कार्यों में अभिकर्ता की भूमिका निभाना
⑤ पंचायती राज संस्थाओं को नेतृत्व प्रदान करना
⑥ राजनीतिक नेतृत्व की भूमिका

नक्सलवादी आन्दोलन → पश्चिम बंगाल मे 1967 ई० में प्रारम्भ हुआ नक्सलवादी आन्दोलन, जो बाद मे देश के अनेक हिस्सों में भी फैल गया। भी एक कृषक आन्दोलन है यह आन्दोलन और - कृषको को अपना शत्रु मानते हुए उनके विरुद्ध संघर्ष पर बल देता रहा है।

चम्पारन (बिहार) आन्दोलन → चम्पारन में हुआ कृषक आन्दोलन वृहत स्वतन्त्रता संग्राम का ही एक भाग था कृषकों में असन्तोष का कारण भूमि के किराये में अत्यधिक वृद्धि, जबरदस्ती, नील की खेती करवाकर उनकी स्वतन्त्रता को कुचलना, भू-स्वामियों की इच्छानुसार फसल उगाना, कृषकों को कम वेतन मिलना तथा उनकी दयनीय सामाजिक - आर्थिक स्थिति थी। 1917 मे गाँधीजी ने चम्पारण के कृषकों को संगठित किया।

एका कृषक आन्दोलन उत्तर प्रदेश में हुआ।

मोपला आन्दोलन मुसलमान ने प्रारम्भ किया।

तेलंगाना आन्दोलन हैदराबाद में प्रारम्भ हुआ।

UNIT- VII

परम्परागत जाति एवं ग्राम पंचायत, पंचायती राज प्रणाली, गुटबन्दी

प्रश्न- जाति पंचायत से आप क्या समझते हैं? भारत में इसके संगठन तथा कार्यों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- जाति पंचायत → जाति व्यवस्था से सम्बन्धित एक व्यवस्थित सामाजिक संस्था को जाति पंचायत कहा जाता है। जाति पंचायत की स्थापना जातीय संगठन एवं व्यवस्था को बनाए रखने के लिए हुई है। प्रत्येक जाति के अपने कुछ नियम व आदेश होते है।

उद्देश्य → ① जाति के सदस्यों को जाति विरोधी कार्यों को करने से रोकना।
② जाति के नियमों और उपनियमों की रक्षा करना।
③ जाति के नियमों का उल्लंघन करने वालों को दण्ड देना।

जाति पंचायत का संगठन → जाति के सभी सदस्य जन्म से ही जाति पंचायत के सदस्य होते है। जाति अपना कार्य चलाने के लिए अपने ही सदस्यों में से कुछ वयोवृद्धों का योग्यता, अनुभव स्थिति तथा लोकप्रियता के आधार पर चयन कर लेती है और उन व्यक्तियों की एक समिति बनाकर जाति के हित में सभी कार्य उस समिति के हाथों में सौंप देती है यही समिति जाति पंचायत बन जाती है

विशेषताएँ

① छोटी व बड़ी पंचायतें → छोटी-2 जातियों में पंचायत का रूप कुछ विस्तृत पाया जाता है। एक गाँव में निवास करने वाली कोई छोटी

जाति दूसरे गांव में निवास करने वाले अपने सजातीय भाईयों से मिलकर अपनी शक्ति और संख्या में वृद्धि करते है।

② स्थायी एवं अस्थायी प्रवृत्ति → कुछ पंचायतें तो जाति में स्थायी रूप से ही बनी रहती है और वंशानुक्रम के आधार पर उसके सदस्य बने रहते है जो भी कोई जातीय मामला खड़ा हो जाता है उसका निर्णय करने के लिए पंचायत पहले से ही तैयार रहती है

③ वंशानुगत आधार → कुछ जातियों में पंचायत का क्षेत्र विस्तृत होता है वहाँ पर स्थानीय जाति पंचायत पर प्रादेशिक जाति पंचाय -त का नियंत्रण होता है।

④ संयुक्त प्रवृत्ति → कुछ गाँवों को मिलाकर एक बड़ी जाति पंचायत भी बनायी जाती है इस बड़ी पंचायत में विभिन्न जातियों के पंचायत के प्रतिनिधि भाग ले सकते है।

⑤ अधिकारी वर्ग व्यवस्था → जाति पंचायत व्यवस्था में एक विशिष्ट कर्मचारी वर्ग भी कार्य करता है प्रत्येक जाति पंचायत का एक प्रधान या मुखिया होता है इनके कार्य भी निश्चित होते है।

⑥ सीमित क्षेत्र → प्राचीन काल से ही जाति पंचायतों का क्षेत्र स्थानीय जाति के लोगों तक ही सीमित था और यातायात के साधनों का अभाव था क्षेत्र सीमित होता है।

जाति पंचायत के कार्य

① जाति सम्मान की रक्षा → यदि कोई व्यक्ति जाति के नियमों का उल्लंघन करता है तो जाति पंचायत उसे दण्ड देने की व्यवस्था करती है।

② विभिन्न विधियों पर निर्णय देना → जातिगत उत्सवों के विषय में भी जाति पंचायत द्वारा ही नियम एवं ढंग का निर्धारण किया जात

है। इन नियमों के सम्बन्ध में कोई भी परिवर्तन करना या निर्णय करना जाति पंचायत का ही कार्य है।

③ जाति प्रतिमानों की रक्षा → प्रत्येक जाति के अपने नियम-उपनियम निश्चित होते है उनका उल्लंघन करने पर जाति पंचायत उसके विरुद्ध कठोर कदम उठाती है।

④ न्याय करना → जाति पंचायत एक सुसंगठित होती है अपराधी के विरुद्ध विधिवत अपना न्यायालय लगाती है पेशी होती है। गवाही होती है और दण्ड घोषित कर दिया जाता है।

⑤ विवाह सम्बन्धों में सहायता → जाति पंचायत योग्य वर वधुओं का चयन कराती है।

⑥ व्यावसायिक प्रशिक्षण की सुविधा → जाति पंचायत अपनी जाति के सदस्यों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण की भी व्यवस्था करती है।

⑦ शिक्षा संस्थाओं की स्थापना → ये जाति पंचायतें अपनी जाति के बच्चों को शिक्षित करने के लिए कुछ शिक्षा संस्थाओं की भी स्थापना करती है।

प्रश्न-2. ग्राम पंचायत का गठन और कार्य बताइये।

उत्तर – ग्राम सभा की कार्यकारिणी को ग्राम पंचायत कहा जाता है इसके सदस्य ग्राम सभा के सदस्यों में से चुने जाते है। तथा इनकी जनसंख्या गाँव पर निर्भर करती है पहले 30 से 51 सदस्य चुने जाते थे परन्तु अब 9 से 15 तक है पाँच साल के लिये चुने जाते है। ग्राम पंचायत की बैठक महीने में एक बार होती है।

कार्य

① कृषि जिसके अन्तर्गत कृषि का विस्तार भी सम्मिलित है →

① कृषि और बागवानी का विकास और प्रोन्नति

② बंजर भूमि और चरागाह भूमि का विकास और उनके अनधिकृत संक्रमण और प्रयोग को रोकथाम करना।

③ भूमि विकास, भूमि सुधार का कार्यान्वयन, चकबन्दी और भूमि संरक्षण →

① भूमि विकास, भूमि सुधार, भूमि संरक्षण में सहकार
② भूमि चकबन्दी में सहायता करना

③ लघु सिंचाई, जल व्यवस्था और जल आच्छादन विकास →

① सिंचाई परियोजना से जल वितरण में प्रबन्ध और सहायता करना।
② लघु सिंचाई का निर्माण, मरम्मत और अनुरक्षण, सिंचाई के उद्देश्य

④ पशुपालन, दुग्ध उद्योग और कुक्कुटपालन →

① पालतू जानवरों और अन्य पशुधनों की नस्लों का सुधार करना।
② दुग्ध उद्योग, कुक्कुटपालन, सूअर पालन

⑤ मत्स्य पालन →

① गाँवों में मछली पालन का विकास।

⑥ सामाजिक और कृषि वानिकी →

① सड़कों और सार्वजनिक भूमि के किनारों पर वृक्षारोपण

⑦ लघु वन उत्पाद → लघु वन उत्पादों की प्रोन्नति।

⑧ लघु उद्योग → व्यापार में उन्नति
लघु उद्योगों का विकास

⑨ ग्राम उद्योग → कृषि उद्योगों का विकास
कुटीर उद्योगों की प्रोन्नति

(10) पेय जल

(11) ईंधन पौधों का विकास

(12) सड़कें, पुलिया, पुलों, नौका घाट, जलमार्ग और संचार के साधन
जलमार्गों का अनुरक्षण
सार्वजनिक स्थानों पर से अतिक्रमण हटाना।

(13) ग्रामीण विद्युतीकरण
(14) गैर-पारस्परिक ऊर्जा स्रोत
(15) गरीबी उपशमन कार्यक्रम
(16) तकनीकी प्रशिक्षण
(17) प्रौढ़ शिक्षा
(18) पुस्तकालय
(19) खेलकूद
(20) बाजार मेले
(21) चिकित्सा स्वच्छता
(22) परिवार कल्याण
(23) आर्थिक विकास के लिए योजना
(24) बाल विकास
(25) समाजकल्याण जिसके अन्तर्गत विकलांगों और मानसिक रूप में मन्द व्यक्तियों का कल्याण
(26) सार्वजनिक वितरण प्रणाली

BULANDSHAHR ... MENT & TECHNOLOGY

प्रश्न - पंचायती राज किसे कहते हैं।
उत्तर - पंचायतो द्वारा गाँवों का शासन करना है ताकि ग्रामीण पुन-निर्माण हो सके। पंचायती राज का सम्बन्ध सत्ता के प्रजातान्त्रिक विकेन्द्रीकरण से है। अत: पंचायती राज को प्रजातन्त्रीय राज्य में जनता को उसके कल्याण कार्य में सहभागी बनाने की एक पद्धति कहा जा सकता है।

प्रश्न - ग्राम सभा किसे कहते हैं?
उत्तर - ग्राम सभा की स्थापना विभिन्न राज्यों में भिन्न आबादी वाले गाँव में होती है पंजाब में 500 अथवा इससे अधिक जनसंख्या वाले गाँव में ग्राम सभा की स्थापना की जाती है। जबकि उत्तर प्रदेश में यह संख्या 250 निश्चित की गई है।

ग्राम सभा एक प्रधान एवं एक उप प्रधान चुनती है जिनका कार्यकाल अब पाँच वर्ष या चुनी गई ग्राम सभा की अवधि तक होता है।

प्रश्न - न्याय पंचायत किसे कहते है?

उत्तर - चार अथवा पाँच पंचायतों पर एक न्याय पंचायत की स्थापना की जाती है जिसके सदस्यों की संख्या बीस से पच्चीस के बीच होती है अर्थात् ग्राम पंचायत पाँच सदस्यों का चुनाव करके न्याय पंचायत के लिए भेजती है, पंचायती अदालत का एक सरपंच होता है, जिसे कई बार जिलाधीश मनोनीत करते है।

BULANDSHAHR ASSOCIATED

प्रश्न - भारत में 73 वाँ संविधान संशोधन →

उत्तर - केन्द्र सरकार ने 1992 ई० में किए गए 73 वें संविधान संशोधन (जो कि 24 अप्रैल 1993 से प्रभावी माना जाता है) द्वारा राज्यों को पंचायती राज अधिनियमों को अधिक प्रभावशाली बनाने के निर्देश दिए है - चुनाव के समय अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों तथा महिलाओं के लिए पंचायतों में स्थान सुरक्षित करने. गाँव के स्तर पर ग्राम पंचायत, ब्लाक स्तर पर पंचायत समिति तथा जिला स्तर पर जिला पंचायत का निर्माण करने तथा अधिकारों और कर्तव्यों की स्पष्ट व्याख्या करने को भी कहा गया है। यह संविधान संशोधन 'पंचायत अधिनियम 1993 के नाम से जाना जाता है। इस संशोधन के अन्तर्गत अनुच्छेद 243 में पंचायती राज से सम्बन्धित व्याख्या दी गई है।

S.No		
①	अनुच्छेद 243 ए	ग्राम सभा
②	" 243 बी	पंचायत का संविधान
③	" 243 सी	पंचायत की संरचना
④	" 243 डी	सदस्या का आरक्षण
⑤	" " ई	पंचायत की अवधि
⑥	" " एफ	सदस्यों की अयोग्यता

(7)	अनुच्छेद, 243 जी	शक्ति, अधिकार और पंचायतों की जिम्मेदारियाँ
(8)	" " एच	पंचायत द्वारा कर लगाने की शक्ति
(9)	" " आई	वित्तीय स्थिति की समीक्षा करने के लिए वित्त आयोग का संविधान
(10)	" " जे	पंचायत खातों का ऑडिट
(11)	" " के	पंचायतो का निर्वाचन
(12)	" " एल	केन्द्रशासित क्षेत्रो की स्थिति
(13)	" " एम	भाग जो विशेष क्षेत्रों में लागू नहीं होगा।

प्रश्न - गुटबन्दी से आप क्या समझते है?

गुट प्रत्येक समाज में पाया जाता है गुट एक ऐसा समूह है जो अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु संगठित है तथा अन्य समूहों से उन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु संघर्षरत भी हो सकता है गुट के सदस्य गुट के प्रति सामुदायिक व निष्ठा की भावना से बंधे रहे ताकि वह सत्ता में भागीदारी से या सत्ता से बाहर रहकर अपने लक्ष्यों को प्रभावशाली ढंग से प्राप्त कर सके। गुट शब्द का प्रयोग रेमण्ड फिर्थ ने 195_ में किया। ग्रामीण गुट वे समूह हैं जिनका उद्देश्य राजनीतिक समूहों के रूप में कार्य करते हुए अपने राजनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करना है,

वेंकटरयप्पा के अनुसार - "गुट उन व्यक्तियों का एक छोटा सा समूह है जो किसी राजनीतिक अथवा सामाजिक कारण से अपने को एकता के सूत्र में बाँधता है प्रत्येक गुट का एक नेता होता है जो अपने अनुयायियों से गुट के प्रति निष्ठा की अपेक्षा रखता है।"

प्रश्न - आधुनिक समय में जाति पंचायत के पतन के कारण।

उत्तर - (1) संविधान तथा सरकार द्वारा जातियों का संरक्षण

(2) शिक्षा का विस्तार

③ व्यक्तिवाद का विकास

④ जाति के महत्व में कमी

⑤ राजनीतिक दलों का विकास

⑥ विभिन्न योजनाओं का आरम्भ

⑦ व्यावसायिक श्रमिक संघों का महत्व

BULANDSHAHR ... MANAGEMENT & TECHNOLOGY

UNIT - VIII

B.A. Ist year

ग्रामीण विकास एवं परिवर्तन

प्रवास का अर्थ

प्रवास किसी स्थान या प्रदेश की जनसंख्या परिवर्तन के लिए तीन मौलिक कारक - जन्म, मृत्यु, प्रवास मे से एक है। किसी भी मानव समूह की जनसंख्या मे वृद्धि दो प्रकार से हो सकती है ① जन्मों मे वृद्धि ② बाहर से आने वाले मनुष्यों के वहां बसने या रहने वाले।

एस० डी० मौर्य के अनुसार → "किसी व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूह द्वारा अपना निवास स्थान छोड़कर अन्य स्थान के लिए स्थायी अथवा अस्थायी रूप से किया गया स्थान परिवर्तन जनसंख्या प्रवास कहलाता है।"

संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार → "प्रवास सामान्यतः निवासस्थान को बदलते हुए एक भौगोलिक इकाई से दूसरी इकाई के लिए भौगोलिक गतिशीलता का एक रूप है।"

अर्थ → एक मानव समुदाय या समूह द्वारा अपने स्थान, प्रदेश को त्यागकर किसी अन्य स्थान पर जाकर रहना या बस जाना प्रवास कहलाता है।

प्रवास के दो भेद

① अन्तर्प्रान्तीय प्रवास

② स्थानीय प्रवास →
- ① ग्राम से नगर प्रवास
- ② नगर से नगर प्रवास
- ③ नगर से ग्राम प्रवास
- ④ ग्राम से ग्राम प्रवास

सामाजिक गतिशीलता

सामाजिक गतिशीलता का अर्थ है - एक से दूसरे स्थान को जाना सामाजिक गतिशीलता को सामाजिक स्तरीकरण की एक व्यवस्था के भीतर व्यक्तियों की सामाजिक स्थिति में आने वाले बदलावों से है।

संस्कृतीकरण → "एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक नीची हिन्दू जाति, जनजाति अथवा अन्य समूह ऊँची और बारम्बर दोबार उत्पन्न जाति की दिशा में अपनी प्रथाओं संस्कार, विचार धारा और जीवन शैली को बदल डालते हैं।"

BULANDSHAHR

पाश्चात्यीकरण का अर्थ → "150 वर्षों से भी अधिक समय के अंग्रेजी राज के परिणामस्वरूप भारतीय समाज और संस्कृति में आए बदलाव इस शब्द में प्रौद्योगिकी संस्थाओं, विचार धारा और मूल्यों के विभिन्न स्तरों पर होने वाले बदलाव निहित हैं।"

सांस्कृतिक विलम्बना → संस्कृति के किसी एक पक्ष का पिछड़ जाना सांस्कृतिक विलम्बना है।

स्थानीय प्रवास → थोड़ी दूर तक होने वाले प्रवास को स्थानीय प्रवास कहते हैं।

ग्रामीण समाज में परिवर्तन हेतु उत्तरदायी के दो कारक

① नवीन राजनीतिक ~~परिस्थि~~ परिस्थितियाँ

② औद्योगीकरण

ग्रामीण विकास एवं परिवर्तन हेतु किन विधियों का उपयोग

(1) प्रेरक विधि → इस विधि के द्वारा ग्रामीण समाज को नवीन परम्पराओं की ओर आकर्षित किया जा सकता है।

(2) प्रदर्शक विधि → ~~प्रेरक~~ इस विधि के द्वारा ग्रामीण समाज में नवीन आविष्कारों का प्रदर्शन करके ग्रामीण जनता को उनकी ओर आकर्षित किया जाता है।

G & R INST. BULANDSHAHR TECHNOLOGY

(3) अनिवार्य विधि → सरकार भी ग्रामीण समुदाय की संरचना में परिवर्तन लाने के लिए अनिवार्य आदेशों को प्रसारित करती है।

(4) सामाजिक दबाव विधि → हड़ताल, सत्याग्रह आदि विधियों को सामाजिक दबाव का साधन माना जाता है।

(5) सम्पर्क विधि → नगरों तथा बाह्य जगत से सम्पर्क स्थापित करने से भी ग्रामीण समुदाय का विघटन हो रहा है।

(6) शैक्षणिक विधि → ग्रामीण समुदायों के सांस्कृतिक प्रतिमानों को बदलने में शिक्षण संस्थाओं, पुस्तकालयों, रेडियो आदि का प्रमुख हाथ है।